

सह-अस्तित्व और सदाचार

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंधानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सह-अस्तित्व का अर्थ है—अपने समान अन्य जीवों के अस्तित्व को स्वीकार करना। सदाचार का अर्थ है सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना। सह-अस्तित्व और सदाचार दोनों मानवीय मूल्य हैं। यदि मनुष्य के अन्दर यह गुण आ जाये तो मानव नर से नारायण बन सकता है। सह-अस्तित्व के कारण हम एक-दूसरे के साथ मिलजुलकर रहते हैं तथा प्रेम तथा सौहार्द्रपूर्ण जीवन यापन करते हैं। उदाहरण के तौर पर हम समझना चाहें तो हम यह देख सकते हैं कि लघु में विराट समाया हुआ है। हम अपने शरीर को ही देखते हैं। इसमें साठ लाख कोशिकाएं हैं। इसी से शरीर चलता है। जब हम दर्द की दवा खाते हैं तो यह दवा शरीर में सेल्स को प्रभावित करती है और जिस स्थान पर दर्द रहता है उस स्थान को फैला देती है जिससे हमारा दर्द ठीक हो जाता है। शरीर में भी एक समन्वय है। प्रकृति ने सभी में सामजस्य की प्रेरणा दी है। इसलिए हमें प्रत्येक वस्तु का त्यागपूर्वक उपयोग करना चाहिए। यदि हम किसी के हिस्से पर अधिकार जमाते हैं तो टकराव शुरू हो जाता है। ऐसा करना दूसरे के अस्तित्व को नकारना है। यह कार्य ठीक नहीं है। इसे हम सदाचार नहीं कह सकते। जैसे हम एक परिवार के सदस्य के रूप में रहते हैं वैसे ही पूरे विश्व के परिवार के साथ हमें रहना चाहिए।

शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व भारतीय संस्कृति के मूल में समाहित है। भारत विविधताओं का देश है। अनेक धर्मों, अनेक पंथों और अनेक सम्प्रदायों के लोग यहां निवास करते हैं। भौगोलिक विभिन्नता, सांस्कृतिक विविधता, भाषा सम्बन्धी विविधता हमारे देश में हैं किन्तु यहां के सभी निवासी शान्तिपूर्ण ढंग से जीवनयापन करते हैं। इसके पीछे भारत की आध्यात्मिक चेतना कार्य करती है। चौरासी लाख जीव योनियों में आत्मा समान है। आत्मा के स्तर में किसी में कोई भेद नहीं है सभी आत्माएं समान हैं। विभिन्नता शरीर के स्तर पर है। यही शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का मूल है। हम सभी जगह आत्मदर्शन करते हैं। इसलिए किसी प्राणी की हिंसा नहीं करते। हमारे भीतर यह भावना रहती है कि जैसे दुःख हमें प्रिय नहीं है वैसे चौरासी

लाख यौनियों में किसी भी प्राणी को दुःख प्रिय नहीं है। इसलिए दुःख किसी को नहीं देना चाहिए।

भारतीय विचारधारा कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास करती है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त है कि जो प्राणी जैसा कर्म करता है, उसका फल भोगने के लिए उसे जन्म ग्रहण करना पड़ता है। यदि अच्छा कार्य किया है तो फल भी अच्छा प्राप्त होगा और कर्म बुरा किया है तो फल भी बुरा प्राप्त होगा। इसलिए मानव को बुरा कर्म नहीं करना चाहिए। बुरा कर्म ही समाज में अशान्ति फैलाता है। धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक अपराध के द्वारा समाज व्यवस्था को भंग करने का जो प्रयास करते हैं वह बुरा कार्य करते हैं। धर्म सदैव अच्छे मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। धर्म आत्मा का स्वभाव है। धर्म हमें वसुधैव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ता है। धर्म जोड़ता है तोड़ता नहीं। धर्म शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की शिक्षा देता है। यदि देशों के बीच शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व कायम रहे तो न तो सीमा विवाद हो और न ही आंतरिक अशांति। अतः शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व विकास का सूत्र है। सबका साथ, सबका विकास शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व से ही सम्भव है।

समता भाव शांति की अवस्था है। कषाय का न रहना समता भाव है। मध्यस्थ भाव रखना समता है। सुख दुःख में समान रहना, एक स्थिति में समता भाव है। गीता में इसे स्थितिप्रज्ञ कहा गया है। प्रियता और अप्रियता में समभाव रखना चाहिए। यह एक उत्तम गुण है। राग-द्वेष में रहना अशांति को जन्म देना है। शांति आत्मा का गुण है। शांति हमें प्रिय है। राग-द्वेष बाहर से आरोपित भाव हैं। सोने से मिट्टी को अलग कर देने पर सोना चमकने लगता है। इसी प्रकार मानव में शांति आ जाने पर उसका चरित्र भी चमकने लगता है। यह अवस्था आत्मा की अपनी स्वाभाविक अवस्था है। कारण और कार्य के अनुसार सृष्टि चलती है। यदि बुरा कर्म किया जाता है तो फल के रूप में भी बुराई ही प्राप्त होती है और यदि अच्छा कार्य किया जाता है तो भलाई प्राप्त होती है। अच्छा और बुरा कर्म करना मानव के अपने अधीन है।

समता, सहअस्तित्व, शांति, सहनशीलता अच्छे गुण हैं। सहनशीलता मानव का सबसे बड़ा गुण है। जिस मानव के अंदर यह गुण रहता है वह महान कहलाता है। जो व्यक्ति जितना सहन

करके चलता है उसका चरित्र उतना ही ऊंचा होता है। चरित्र वह हीरा है जो टूटकर जुड़ता नहीं। चरित्र निर्माण मानव की स्वाधीन प्रक्रिया है। चरित्र ही ऐसा है जिसे मानव गढ़ सकता है। यह उसके अपने अधिकार का विषय है। किसी व्यक्ति को किसी बुराई का परित्याग करने को कहा जाता है तो अक्सर उत्तर मिलता है कि क्या करूं मैं मानता हूं कि यह कार्य गलत है, किंतु मेरी आदत पड़ गई है, आदत छूटना बड़ा कठिन है। सदाचार से चरित्र निर्माण होता है। चरित्र निर्माण के संबंध में पहली आवश्यकता है व्यक्ति अपनी आत्म-शक्ति को पहचाने। अपने आप में एक अनंत शक्ति का स्रोत निरंतर प्रवाहित है। सहनशीलता का अपने आप में अनुभव एक ऐसी जबर्दस्त प्रक्रिया है कि वह जीवन के प्रति समस्त दृष्टिकोण को बदल देती है।